काम और

ज़्यादा काम

काम और ज़्यादा काम

टॉम एक ऐसे देश में रहता है जहां वो और उसके माता-पिता बहुत सारे काम करते हैं, जिसमें सब्जियां उगाने से लेकर ऊन बुनने से लेकर कीलें बनाने तक का काम शामिल है.

"शहर में ऐसा क्या है?" टॉम पूछता है.

"हर जगह एक ही जैसा ही होता है," टॉम के माँ और पिता उसे बताते हैं, "बस काम और अधिक काम."

टॉम इस बात को खुद परखना चाहता है. टॉम एक गठरी में रोटी और पनीर रखकर अपने घर से निकलता है. उसकी जिज्ञासा उसे गांव से शहर और वहां से समुद्र द्वारा चीन, भारत और श्रीलंका में दूर-दराज़ के बंदरगाहों तक ले जाती है. फिर टॉम जिस स्थान पर जाता है, वो सभी प्रकार के काम और सभी प्रकार के अचरजों का पता लगाता है.

टॉम सुबह से चुकंदर के खेतों की निंदाई कर रहा था.

हर बार जब कोई धूल धूसरित यात्री या कोई बैलगाड़ी उसके सामने से गुजरती, तो टॉम यह पूछने के लिए भागता था, "आप कहाँ जा रहे हैं, सर?" या "आप कहाँ जा रही हैं, मैडम?"

"मैं शहर में अपने सुअर बेचने जा रहा हूँ."

"मुझे बकरी खरीदने के लिए शहर जाना है."

"मुझे शहर में यह मुर्गी बेंचकर एक बत्तख खरीदनी है."

टॉम उन्हें देखता ही रहता था. फिर कुछ देर में वे सभी लोग पहाड़ी के पीछे कहीं गायब हो जाते थे.

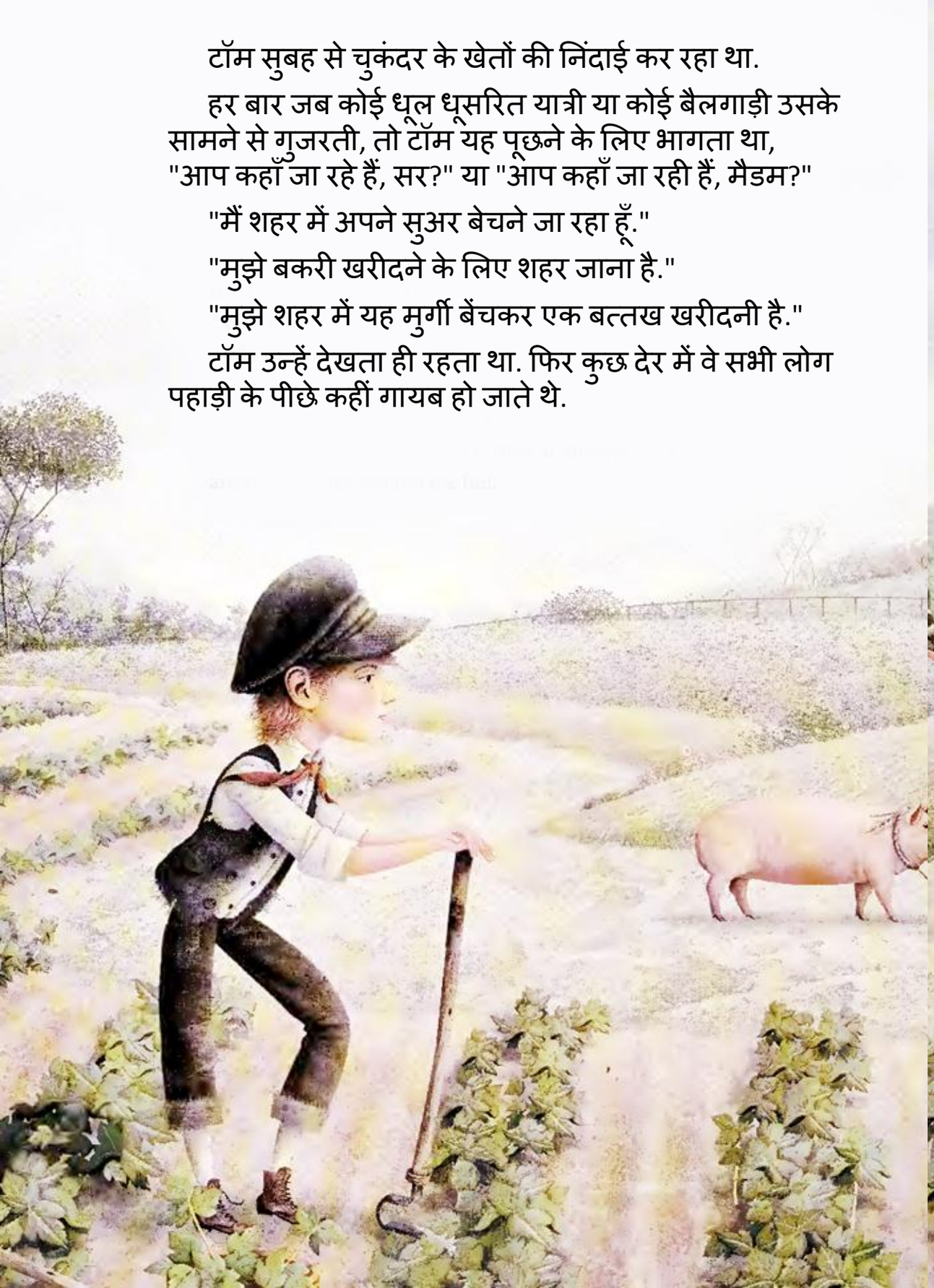

"शहर में क्या होता है?" टॉम ने अपनी मां से पूछा.

"हर जगह एक जैसा ही होता होगा," माँ ने कहा. माँ सूत कात रही थीं और उन्होंने अपनी आँखों को घूमने वाले पहिए से ऊपर नहीं उठाया. "काम और अधिक काम."

"मुझे शहर देखना बहुत अच्छा लगेगा," टॉम ने अपने पिता से कहा.

"उससे कोई फायदा नहीं होगा," उसके पिता ने कहा. पिताजी निहाई पर लोहा ठोक-ठोककर कीलें बना रहे थे. उन्होंने अपने काम से आँख तक नहीं उठाई.
"वहाँ काम और अधिक काम के अलावा और कुछ नहीं होगा."

फिर भी टॉम ने शहर जाने का अपना मन बनाया.

अगले बाजार वाले दिन, सुबह के समय टॉम ने एक गठरी में एक पाव रोटी और पनीर का टुकड़ा बांधा और फिर उसने अपनी मां और पिता को चूमा. उसके बाद वो सड़क पर आगे बढ़ा.

कुछ देर बाद उसे बाजार जाती घास से भरी हुई गाड़ी पर मुफ्त सवारी मिली. जल्द ही वे एक चौराहे पर पहुंचे और फिर वे एक चर्च, एक लोहार की वर्कशॉप और एक चक्की के सामने से गुजरे. रास्ते में भेड़ें खेतों में चर रही थीं और फेरीवाले अपने माल को बेंचने के लिए आवाज़ें लगा रहे थे.

"मेरे बर्तन खरीदो," एक छोटा लड़का चिल्ला रहा था. उसकी ऐड़ी के पास एक छोटा पिल्ला भूँक रहा था.

"केक खरीदो," पीला एप्रन पहने एक महिला गा रही थी.

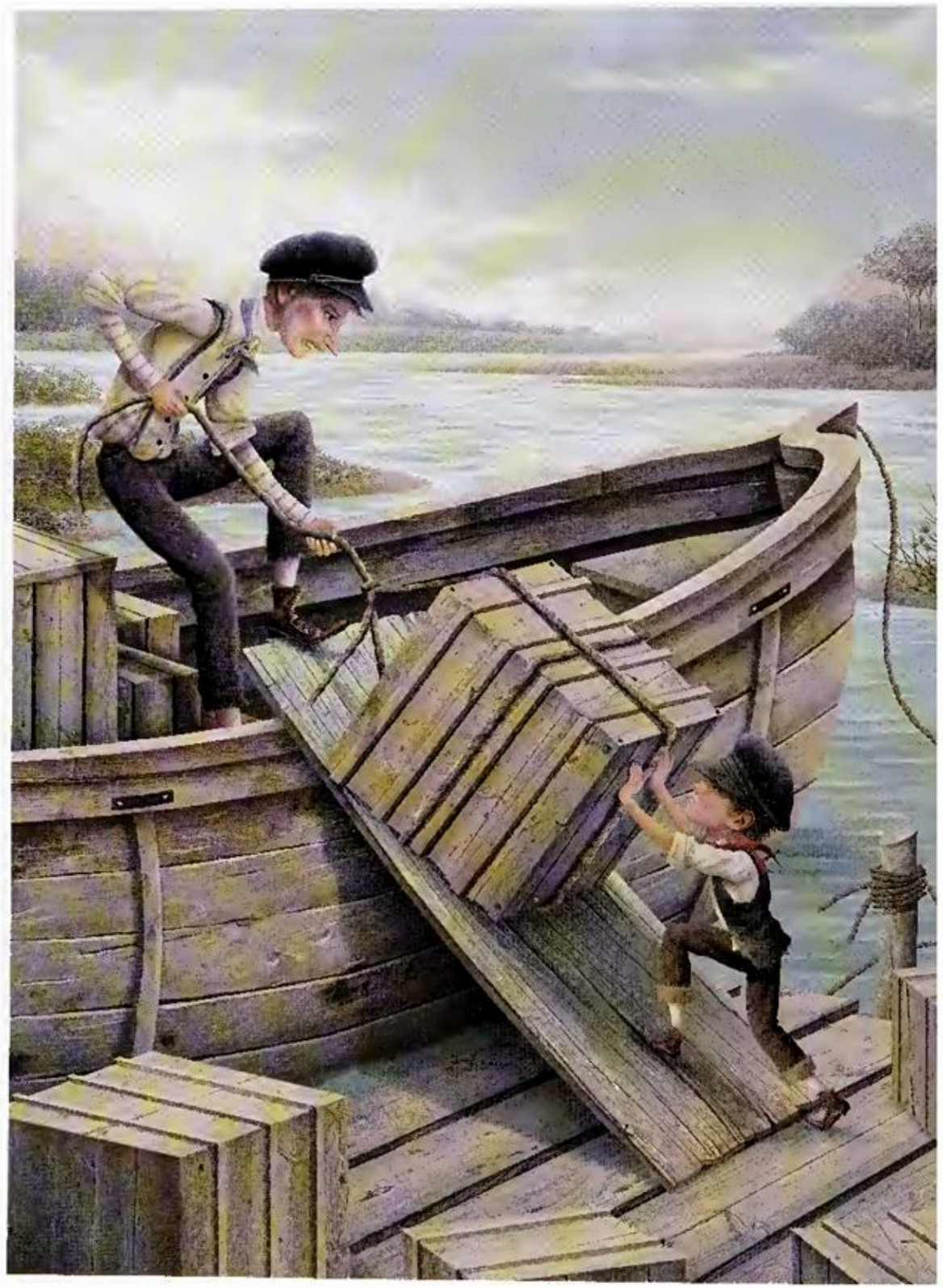

"अरे लड़के," एक आदमी ने टॉम को बुलाया और कहा. "ज़रा बजरे पर इन टोकरों के ढेर को रखने में मेरी मदद करो!"

दिन के अंत होने तक टॉम काम करते-करते थक गया, लेकिन वो बेहद खुश था. टॉम नदी के किनारे बजरे पर ही सो गया और उसने नाव वाले के साथ रात का खाना साझा किया.

"यह बजरा कहाँ जाएगा?" टॉम ने पूछा.

"वो शहर के अलावा और कहाँ जाएगा."

"शहर में क्या अलग होगा?"

"शहर भी अन्य जगहों जैसा ही होता है. वहां भी लोगों को खूब काम करना पड़ता है."

फिर टॉम ने सोचा कि वो शहर जाएगा.

टॉम ने ऐसी हलचल पहले कभी नहीं देखी थी! पूरी सड़क लोगों, घोड़ों और गाड़ियों, टोकरियों, ड्रमों और बक्सों से भरी थी. कहीं कुत्ते थे तो कहीं चिड़ियों के पिंजड़े और हर कोई जल्दी में था और चिल्ला रहा था.

"अरे लड़के!" एक महिला ने टॉम को बुलाया. "ज़रा इस नोट को पादरी तक पहुंचाकर आओ."

"अरे उस बैरल को रोल करने में मेरी मदद करो."

"सुनो बेटा, ज़रा इन कब्ज़ों को ज़रा बंदरगाह तक पहुंचा कर आओ."

बंदरगाह के तट पर, टॉम ने शानदार जहाजों को देखा. उनके मस्तूल चर्च की मीनारों जितने ऊँचे थे, और उनके बांस खुले हाथों जैसे लोगों का स्वागत कर रहे थे. जहाज़ बहुत बड़े थे - कुछ तो घरों से भी बड़े. टांगों जितनी मोटी रस्सियों से जहाज़ गोदी से बंधे थे.

"समुद्र की सैर कैसी होती है?" टॉम ने एक नाविक से पूछा.

"चादर धोना और पाल बांधना! समुद्र पर बड़ी मेहनत करनी पड़ती है."

फिर भी, टॉम ने विस्तृत महासागर को निहारते हुए सोचा कि मैं समुद्र की यात्रा ज़रूर करूंगा.

नाविकों ने पाल बांधे. कुछ देर में तेज़ हवायें उन्हें समुद्र में काफी दूर ले गईं. टॉम मस्तूल की चोटी पर चढ़ गया और वो अंतहीन नीले सागर को टकटकी लगाए निहारता रहा.

अंधेरा हो जाने के बाद जहाज़ तूफ़ान में फंस गया. उन्होंने हवा के तेज़ झोंकों और भयानक खतरनाक लहरों का सामना किया. टॉम डर गया. उसे लगा कि वे सभी डूब जायेंगे. लेकिन तूफान गुजर गया.

जब टॉम को यकीन हुआ कि दुनिया में समुद्र के अलावा कुछ नहीं बचा था, तभी उसे ज़मीन दिखाई दी.

वो कई बंदरगाहों पर रुके और वहां से उन्होंने अपने जहाज़ में माल और सामान भरा.

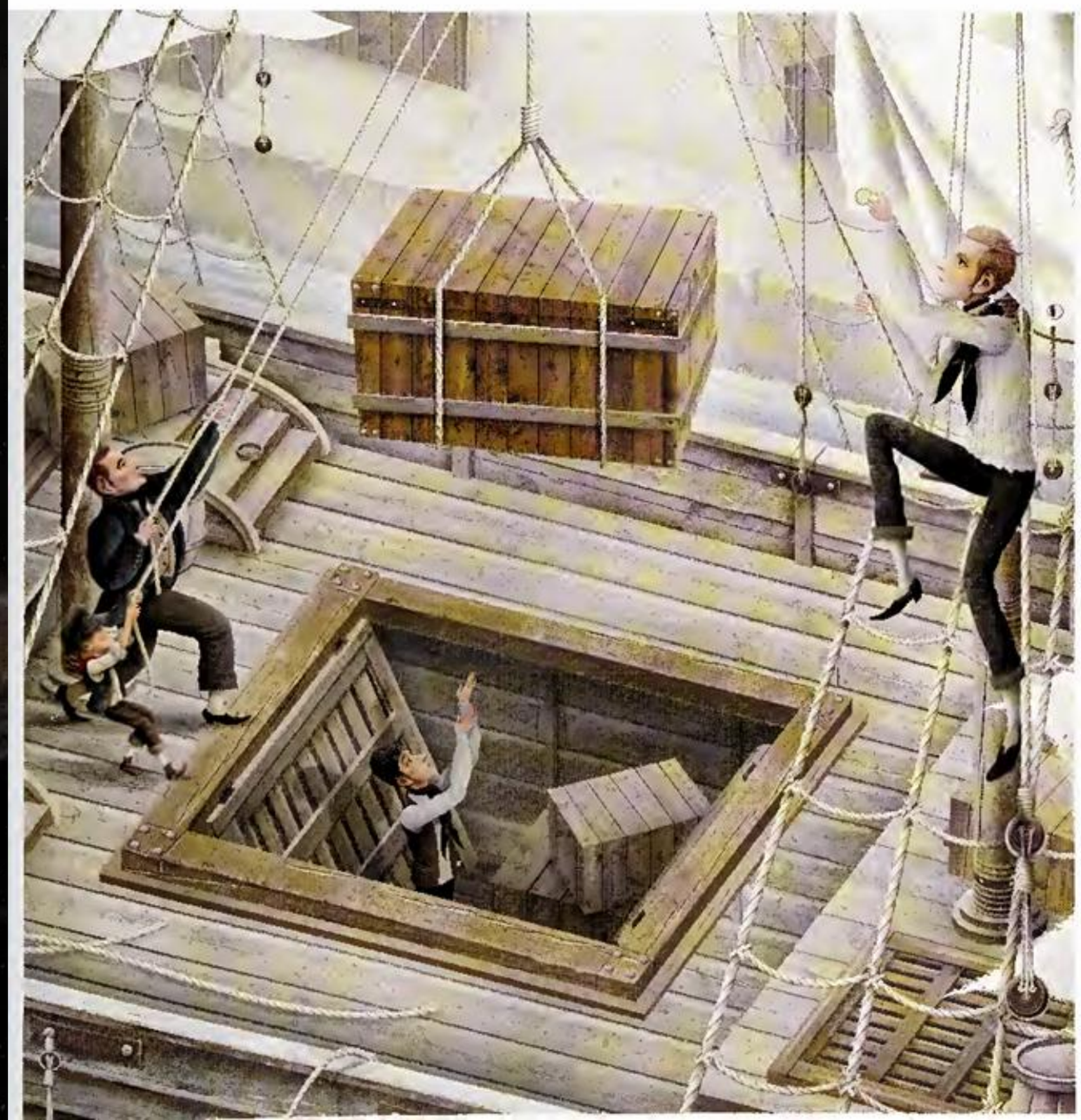

चीन में जहाज, भीड़ भरी सुन्दर नावों के बीच से होता हुआ बंदरगाह तक पहुंचा.

एक बढ़िया धुँधली खुशबू ने टॉम को एक भीड़ भरे आँगन की ओर आकर्षित किया. चाय! क्या खुशबूदार चाय थी!

वहां पर मज़दूर चमकीले रंग की चाय की पेटियों को अपने कंधों पर लादकर दौड़े-दौड़े उन्हें जहाज पर लोड कर रहे थे.

भारत की हवा में कड़ी पत्तों और जायफल की सुगंध थी. बाजार में, महिलाओं ने चमकदार साड़ियां पहनी थीं. टॉम ने एक ऊंचे ड्रम में लोगों को रंगाई के लिए रंग घोलते हुए देखा. तेज धूप में उनकी मांसपेशियां से, पसीने की बूंदें चमक रही थीं.

"नील यानि इंडिगो," एक लड़के ने मुस्कुराते हुए कहा. उसने टॉम को शुद्ध नीले रंग का एक छोटा टुकड़ा भेंट किया - जो बिल्कुल समुद्र के रंग की तरह ही नीला था.

श्रीलंका में, लोग दालचीनी को चटाइयों पर पालथी मारे बैठे हुए छील रहे थे. वे दालचीनी की शाखाओं की नरम छाल को छीलते हुए हल्के-हल्के गीत गुनगुना रहे थे.

मसालों के बोरों को जहाज़ में लोड करने में काफी समय लगा. उसके बाद जहाज ने समुद्र में अपनी यात्रा दुबारा शुरू की. टॉम अपने झूले पर लेट गया और श्रीलंका की गर्म हरी पहाड़ियों के सपने देखते हुए सुगंधित छाल को चबाने लगा.

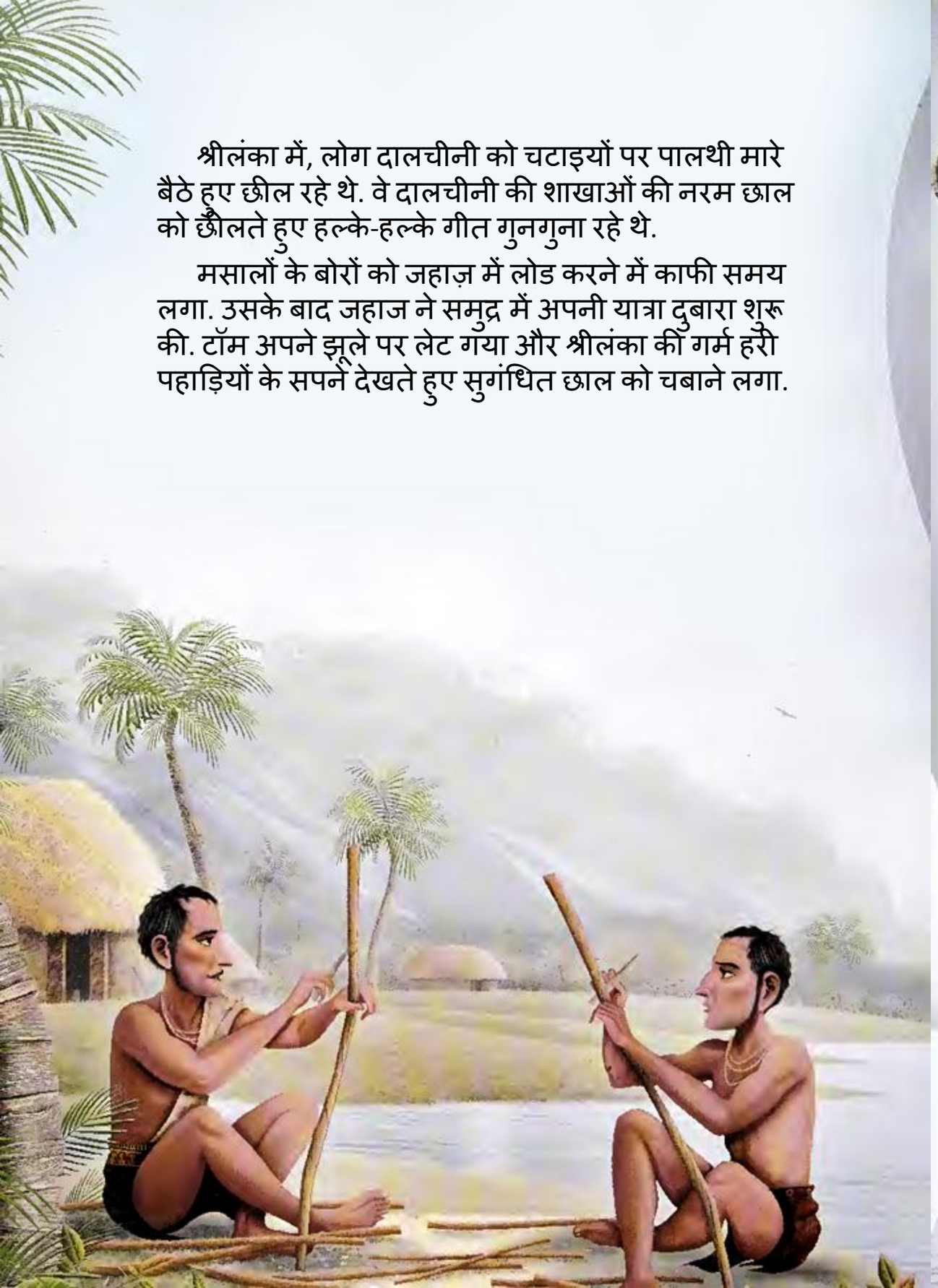

टॉम बहुत लंबे समय से अपने घर से दूर था. दुनिया काफी बड़ी, व्यस्त और आकर्षक जगह थी.

फिर टॉम ने घर लौटने की सोची.

जहाज से उतरने के बाद वो शहर से होकर नदी के किनारे होता हुआ अपने गांव पहुंचा. अपनी रोमांचक यात्राओं के बाद अब टॉम को अपना गांव बहुत छोटा और शांत लग रहा था. गांव की घुमावदार सड़कों पर चलता हुआ अंत में टॉम अपने घर पहुंचा.

"अरे टॉम आया है?" टॉम के पिता चिल्लाए. "देखो अब वो युवा है. वो उस छोटे लड़के से काफी अलग है जो हमें छोड़कर गया था."

"क्या यह टॉम है?" माँ अपने बेटे को देखकर चिल्लाई. सालों की सूत कताई के बाद अब माँ की आँखें मंद पड़ने लगी थीं.

"हाँ आपका टॉम घर वापिस आया है - कहानियों और तमाम खजाने के साथ."

जब टॉम ने अपनी गठरी खोली तो दालचीनी की सुगंध से उनका घर महक गया. उसने मेज पर अपने उपहार फैलाए.

पिताजी ने टॉम की कीमती चाय में उबलता पानी डाला. माँ ने इंडिगो रेशम को अपनी बूढ़ी उंगलियों से स्पर्श किया. यह रेशम तो क्रीम की तरह चिकनी और नीली है.

"दुनिया में हर जगह लोग सुंदर चीजें बनाने में व्यस्त हैं," टॉम ने कहा.

"मैंने भी वही सोचा था," पिताजी ने कहा.

"मैंने तुमसे पहले ही कहा था," माँ ने कहा. "तुम चाहें जहां भी जाओ - वहां बस काम ही काम होगा."

समाप्त